International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

मैला आँचल उपन्यास में आँचलिक युगबोध

कृष्णचन्द यादव
शोधछात्र,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा,बिहार,भारत।

आँचलिक उपन्यासकारों में फणीश्वरनाथ रेणु का नाम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने ही अपने उपन्यास का नामकरण 'मैला आँचल' किया। इसी उपन्यास के नाम और कथ्य दोनों को लेकर आँचलिक शब्द का हिन्दी आलोचना में समावेश हुआ। रेणु जी बिहार प्रांत के पूर्णिया जिले के एक छोटे से गाँव में जन्मे थे और उन्होंने अपने प्रदेश के जीवन के सभी पक्षों का मर्म स्पर्शी अध्ययन एवं निरीक्षण किया था। स्थानिक एवं आँचलिक विशिष्टताओं का किसी भी हिन्दी उपन्यासकार ने इतना सम्पूर्ण एवं व्यापक आकलन नहीं किया था जितना कि 'मैला आँचल' में। उन्होंने अंचल में तादात्मय स्थापित किया, और इसकी राह से गम्भीरता के साथ गुजरते हुए भूमिका में लिखा है – '' इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरुपता भी। मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''[प] लेखक ने अपने उपन्यास के नामकरण के बारे में स्वयं कहते हैं – 'पूर्णिया जिले में बहुत से ग्राम और कस्बे है, जो आज भी अपने नामों पर नीलहे साहबों का बोझ ढ़ो रहे हैं। वीरान जंगलों और मैदानों में नील कोठी के खण्डहर, राही बटोहियों को आज भी 'नीलयुग' को भूली हुई कहानियाँ याद दिलाते हैं . . .।' ऐसा ही एक गाँव है 'मेरीगंज' रोतहट स्टेशन से सात कोस पूरब, बूढ़ी कोसी को पार करके जाना होता है। बूढ़ी कोसी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूरों के पेड़ों से भरा हुआ जंगल हैं। इस अंचल के लोग इसे 'नवाबी ताना-बाना' कहते हैं. ताना-बाना के बाद ही एक बड़ा मैदान हैं, जो नेपाल की तराई से शुरु होकर गंगा के किनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड़ जमीन बन्ध्या धरती का विशाल अंचल। इसमें दूब भी नहीं पनपती। बीच-बीच में बालूचर, और कहीं-कहीं बेर की झाडियाँ है।''[पप]उपन्यास के सामाजिक पक्ष प्रबल रूप में व्यक्त हुआ है। गाँव में राजपूतों, कायस्थों, यादवों और ब्रह्मण टोली के लोग हैं। इनके अतिरिक्त संथाल जाति के लोग भी हैं। इन सभी में परस्पर मनमुटाव है। इसी कारण इनमें प्रायः संघर्ष होता रहता है। ''समाज में ऊँची जाति के लोग निम्नवर्गीय स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध रखने में कोई हर्ज नहीं समझते तो दूसरी ओर उच्च वर्ग की स्त्रियाँ भी पुरुषों की कमजोरी का भरपूर उपयोग करती हैं।''[पपप] हरगौरी अपनी मौसेरी बहन का उपयोग करता है। तो कमली भी अवसर पाकर डॉकटर से सम्बन्ध जोड़ लेती हैं बलदेव और लक्ष्मी तथा कालीचरण और मंगला भी जीवन का आनन्द लूटने व मजा लेने में पीछे नहीं रहते। मेरीगंज गाँव में रहनेवाले पेट की भूख के समान ही यौन की भूख की तृप्ति करते हैं और उसके लिए

किसी प्रकार की नैतिकता को आड़े नहीं आने देते। जब लड़ते हैं, तो सभी एक दूसरे की पोल खोलने में गौरव समझते है, और लड़ाई समाप्त हो जाने पर फिर सब पूर्ववत् हँसते-गाते और सम्मिलित होकर उत्सव में मनाते है।

सबसे बड़ी बात यह है कि इस उपन्यास में आँचलिक युग-बोध के साथ लोक-जीवन, लोक-संस्कृति, लोक-विश्वास, रहन-सहन, आमोद-प्रमोद, आर्थिक, सामाजिक, जमींदारी प्रथा, धार्मिक स्थिति, रीति-रिवाज, परम्परा और परिस्थितियों पर जन-जीवन का क्या प्रभाव पड़ा है। इसका बहुत ही कुशलता और बारीकी से चित्रण किया गया है। इन स्थितियों में जीवन में व्याप्त नयी विसंगतियों और परिस्थितियों को उभारा है। इनमें निम्न बातों को यथार्थवादी प्रसंगों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है – नीलकोठी, आपस संघर्ष, अंधविश्वास, पर्व-त्योहार, अखाडा-दंगल, सरसता एवं अज्ञान, प्रेम-सम्बन्ध आरोप-प्रत्यारोप, महिला संघर्ष, कथा-कीर्तन, भय, जाति-पाँति, जमींदारी प्रथा, संथाली संस्कृति, नशा, जीवन-मूल्य, आदि। इस उपन्यास में विभिन्न प्रकार के लोक-गीत उभरे हैं; जो लोक-संस्कृति की पूरी छटा प्रस्तुत करते है –

'बढ़ती जवानी मोरा अंग-अंग – फड़के से।
कब होई है गबना हमार भउजिया।।'

'मैला आँचल' में स्थानीय ढंग, ग्रामीण संस्कृति और जीवन की पूरी झलक प्रस्तुत की गई है। अंचल विशेष की सम्भवतः कोई भी स्थिति अछूती नहीं रह पाई है। 'मैला आँचल' भारतीय गाँवों में स्वतंत्रता के बाद घटित हो रहे परिवर्तनों का एक दस्तावेज है। ''आजादी के पूर्व के भारतीय ग्राम्य-जीवन का सृजनात्मक प्रामाणिक चित्रण करने के लिए प्रेमचंद के गोदान की जो महत्ता थी, ठीक वैसी ही महत्ता स्वतंत्र भारत में 'मैला आँचल' की है।''[पअ]

भारत की आत्मा कृषि पर निर्भर करती है। कृषि किसानों की मर्यादा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है। कृषि के प्रति ग्रामीणों के मन में एक विशेष प्रकार का लगाव होता है। रेणु की रचनायें कृषि के ईद-गिर्द घूमती हुई नजर आती है। पूर्णिया के सीमावर्ती जिलों में खेती आजीविका का साधन है। इस इलाके के अधिकांश खेत जमींदार एवं बड़े-बड़े किसानों के पास है। निर्धन किसान की कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा जमींदार के खलिहान में जमा होता है। किसान पैदा किये हुए अनाज के लिए घिघियाते रहते हैं। कितनी बड़ी विडम्बना है कि जो मोती जैसे अनाज के दाने पैदा करता है, उसके हाथ में केवल आँसू के दाने आते हैं। मौसम की मार से ओला-पाला-सूखा-बाढ़ आदि किसान की आशाओं पर पानी फेर देते हैं।

'**मैला आँचल**' उपन्यास में प्रकृति की इसी अनुकूलता-प्रतिकूलता पर विचार करते हुए रेणु जी कहते हैं – ''हर साल बरसात के मौसम में यही होता है। भगवान की हाथ की बात इंसान क्या जाने ? इन्द्र भगवान से प्रार्थना की जाती है बरसाओ ! इन्द्र महाराज . . . ।''

समस्त उत्तर बिहार बाढ़ के कारण जलमग्न हो जाता है। छोटे-मोटे झोपड़े पानी में तैरते हुए दिखायी देते हैं। हमारी सरकारों के द्वारा अगर इस समस्या का समाधान खोज लिया गया तो खजाना कैसे भरेगा ? आर्थिक सरकारी स्रोत समाप्त हो जाएगी। बाढ़ की लूट छुट में गाय, बैल, भैंस, बकरी झुंड-के-झुंड नदियों में बहते हुए नजर आते हैं। मौते और जीवन से जूझते हुए लोग बाढ़ की इस विभीषिका को झेलते हैं।

रेणु के कथा साहित्य में दो प्रकार की बेकारी को दर्शाया गया है एक मौसमी बेकारी जिसमें मौसम के अनुकूल काम मिला। खेती के बाद चुपचाप घर में निठ्ठले बनकर बैठ जाना। कुछ महीनों में छोड़कर कृषि कार्य में लगे लोग बेकार हो जाते हैं। दूसरी बेकारी जो प्रायः सभी राज्य में किसी-न-किसी रूप में व्याप्त है जो भारत की एक ज्वलंत समस्या बन गई हैं। प्राइवेट सेक्टर में आरक्षण न देना, जनसंख्या वृद्धि, उद्योग-धंधों का बन्द होना, भूमि की सीमितता आदि। रेणु ने बेकारी जन्य विभिन्न विपन्नताओं को अपने कथा-साहित्य में चित्रित किया है। यह बेकारी राष्ट्र के लिए एक दिन घातक सिद्ध होगी। पेट की आग इंसान को अनैतिक कार्य करने के लिए बाध्य कर देती है। भूख से बिलबिलाते इंसान से नैतिकता का आशा करना बेकार है। ''मैला आँचल'' उपन्यास में मेरीगंज गाँव के लोगों में जो बुराइयाँ पनप रही है, उनके मूल में यही कारण निहित है। भूख के कारण पाँच साल का बालक जमींदारों की क्रूरता का शिकार बनता नजर आता है। रेणु ने निर्धनता, बेकारी, बढ़ती हुई महँगाई, आर्थिक विपन्नता को अपने साहित्य में दिखाया है।

भूमि सम्बन्धी विषमता के कारण जमींदार, कृषक, मजदूर में हमेशा तनाव की स्थिति कायम रहती है। जिसके पास हजारों बींघा जमीन है वह और अधिक जमीन की भूख से छटपटा रहा है और दूसरी और एक ऐसा भी वर्ग है जिसे गर्मी-सर्दी से बचने के लिए झोपड़ी भी नसीब नहीं होती।

समयानुसार समय चक्र बदला। जमींदारी उन्मूलन के उपरान्त भूमि व्यवस्था में कुछ परिवर्तन आया, परन्तु जमींदारी और सम्पन्न वर्ग ने स्वयं को उस परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार मोड़कर अपनी स्थिति पूर्ववत् सुदृढ़ कर ली।

जमींदारी प्रथा समाप्त हो गयी, महाजन खत्म हो गये, जीवन के सभी अधिकार मिल गये, परन्तु निर्धन किसान-मजदूर की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। जमींदारों ने राजनीति में घुसकर राजनीति पर कब्जा कर लिया।

फणीश्वरनाथ रेणु गाँधीवादी, समाजवादी, मानवतावादी से एक कदम आगे जनवादी थे। उनकी जनवादी दृष्टि ने उन्हें एक गरिमा प्रदान की है। उन्होंने ग्रामीण जिन्दगी का उसकी संगतियों-विसंगतियों सहित साक्षात्कार किया था। नागरिक जीवन की विषमताओं एवं विभीषिकाओं से भी उतना ही परिचित थे। ईमानदारी से काम करते हुए, पीड़ित पद-दलित और भूख से बिलबिलाते इंसान ही उन्हें दिखायी पड़ते थे। यही इंसान उनके सबसे अधिक करीब थे। जिनके प्रति उनके ह्रदय में अथाह करुणा और संवेदना थी। रेणु जी का अकथनीय साहस, जमीनी ताकत, बेवाक उक्ति सदैव जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

संदर्भ सूची

[i] फणीश्वर नाथ रेणु – मैला आँचल-भूमिका, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण

[ii] फणीश्वर नाथ रेणु – मैला आँचल भूमिका राजकमल प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, पृ० सं० – 5-6

[iii] डॉ० जगदीश शरण, हिन्दी, उपकार प्रकाशन पृ० सं० – 267

[iv] फणीश्वरनाथ रेणु और मैला आँचल, श्री राकेश, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ पृ० सं० – 04